॥ ओ३म् ॥

सिख
और
यज्ञोपवीत

5011

—: लेखक :—

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

वि०सं०—: २०३९

मूल्य ७५ पैसे

भूमिका

पिछले कई वर्षों से जिला रोहतक के कार्य-कर्ता कहते रहते थे, कि मैं जिला रोहतक के ग्रामों में भ्रमण करके धर्म प्रचार करूं, उनकी इच्छ नुसार मैंने इस वर्ष जिला रोहतक और गुड़गावां के कुछ ग्रामों का भ्रमण किया।

जिस दिन मैं गोहाना जिला रोहतक में था, वहां प्रचार समय यज्ञोपवीत पर बोलते हुए मेरे मुख से ये शब्द भी निकले, कि सिख गुरुओं ने यज्ञोपवीत पहना था, और सिखों को पहनने का आदेश भी दिया है। और "दइया कपाह" शब्द व्रतबन्ध के निषेध परक नहीं है वह बाहर उपवीत के साथ-साथ दइया आदि अवुर्णों का विधायक है।

उसके पश्चात् श्रीमान् जगदेव जी सिद्धान्ती आदि ने कहा, आप सिखों के जनेऊ विषय में कुछ लिख दें, तो अच्छ हो, क्योंकि हमें तो यही ज्ञान था, कि सिख मत में जनेऊ धारण का विधान नहीं है। आज आपसे पता लगा, कि प्रतिज्ञा तन्तु उनके भी है, उनको उस समय यही उत्तर दिया, अच्छा देखा जायगा।

भ्रमण समाप्ति पर मैं दिल्ली आया उस दिन श्री० जगदेव जी सिद्धान्ती शास्त्री और पं०पूर्णचन्द जी सिद्धान्तभूषण मिलने आये और चलते समय पुनःआग्रह किया कि यज्ञोपवीत विषयक लेख अवश्य लिखें।

उनके आग्रह को देख कर मैंने कहा अच्छा मठ में जाकर लिखने का यत्न करूंगा, उसी वचन के आधार पर यह निबन्ध लिखा है।

इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, नानक प्रकाश, पंच प्रकाश गुरु विलास, गुरु मत निर्णय सागर, जन्म साखी का आशय लिखा है। इसलिए मैं श्री गुरुजी महाराज तथा अन्य सज्जन लेखकों का आभारी हूं और पाठकों से निवेदन करता हूं वह इसको न्याय की दृष्टि से पढ़ें। मत, पंथ, मजहब, के पक्षपात से न पढ़ें, यह निबंध धर्मभाव से प्रेरित होकर ही लिखा है। अतः भगवान् से प्रार्थी हूं, वह सबको धर्मात्मा बनावे। १-११-२००५ दीनानगर गुरुदासपुर **स्वतन्त्रानन्द**

प्रकाशक: हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर रोहतक

सिख गुरु तथा यज्ञोपवीत

प्रश्न—सिख पंथ में यज्ञोपवीत धारण की विधि है वा नहीं ?

उत्तर—प्रथम कई सिख यज्ञोपवीत धारण करते थे, और गुरु सब क्षत्रिय ही थे, उनके भी यज्ञोपवीत थे। किंतु इस समय सिख यज्ञोपवीत नहीं पहनते हैं।

प्रश्न—श्रीमान् विश्वनाथजी शास्त्री ने यज्ञोपवीत मीमांसा नाम की पुस्तक लिखी है, उसमें उन्होंने गुरु नानकदेवजी के सिद्धांत का भी उल्लेख किया है, उन्होंने 'दइया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत बट' शब्द लिखकर सम्मति दी है, कि गुरु नानकदेवजी संन्यासियों का अध्यात्म उपवीत ही मानते थे।

उत्तर—प्रतीत होता है, श्रीमान् विश्वनाथजी ने सिख साहित्य का अवलोकन नहीं किया, यदि वह इस साहित्य का अध्ययन करते, तो ऐसा कभी न लिखते।

प्रश्न—आप जब तक सिख पंथ के पुस्तकों के प्रमाण न दें उस समय तक विश्वास करना कठिन है, क्योंकि आजकल जो सिख मिलते हैं, वह केश कंघा, कृपाण, कच्छ, कड़ा पांच ककार पहनते हैं, और सत्र कहते हैं, गुरुजी ने 'दइया कपाह' वाले शब्द में यज्ञोपवीत का निषेध किया है, और अलीगढ़ में जब सिखों के लीडर मास्टर तारासिंहजी आये थे, उस समय वहां अनेक व्यक्तियों ने सिख मत की दीक्षा ली थी, उस समय जिनके गले में प्रथम यज्ञोपवीत था, उनके गले से सिख नेताओं की सम्मति से उपवीत उतरवा दिये थे, इसलिये यही प्रतीत होता है, कि न तो सिख गुरु यज्ञोपवीत पहनते थे और ना ही उन्होंने अपने सिखों को इसके धारण का आदेश दिया है। इसी लिये सिख यज्ञोपवीत धारण नहीं करते हैं।

उत्तर—अच्छा आपकी इच्छानुसार आपके सामने सिख मत के ग्रन्थों के पाठ ही बतलाते हैं, ताकि आपको निर्णय करने में सरलता हो।

प्रथम निषेध परक पाठ लिखते हैं। उसमें भी सबसे पहले वह शब्द लिखते हैं, जिसे श्रीमान् विश्वनाथजी ने लिखा है फिर दूसरे शब्द लिखे जायंगे।

"दइया कपाह सतोष सूत जत गंढी सत वट।
एह जनेऊ जीअ का हई ता पांडे घत।
ना एह तुटे न भल लगे ना एह जले न जाई।
धन्न सु माणस नानका जि गल चले पाई।
चाउकड़ी मुल अणाइया वह चउके पाइया।
सिखा कंन चढ़ाइया गुर बाहमण थिया।
ओह मुआ ओह उड़ पइया वे तगा गइया।

श्लोक महला १

लख चोरियां लख जारियां लख कूड़िया लख गालि।
लख ठगीया पहनामीया रात दिन सु जीअ नालि।
तग न कपाहहु कती अह बाहमण बठै आई।
कुहि बकरा हिन्ह खाइया सभको आखै पाइ।
होय पुराणा सुटिये भी फिर पाइये होर।
नानक तग न टुटई जे तग होवे जोर।?।

महला। १।

नाइ मंनीए मन उपजे सालाही सच सूतु।
दरगह अन्दर पाइए तग न तुटसु पूतु। १। महला।
तगु न इन्द्री तग न नारी भलके थुक पवै नित दाड़ी।
तगु न पैरी तग न हथी। तगु न जिहवा तग न अखी।
वे तगा आपे बते। बट धागे अवरां घते।
लै भाड़ करे वी आह। काढ़ि कांगल दसे राह।

सुख वेखहु लोकां एह विडाणा।
मन अंधा नाउ सुजाणा। आसा-दीनार महला शब्द १६"

सिखों के कई रहित नामे हैं जिनमें सिखों के लिये रहित (मर्यादा) का विधान है। इनके लेखक भिन्न भिन्न हैं, उन रहित नामों में यज्ञोपवीत का निषेध है— "गुरु जी सिख जंञू टिके दी काण न करे अर्थात् जंञू टिका धारन न करे। रहित नामा भाई चोपसिंह जी"

"जनेऊ न पाइ। तिलक धागा काठ दी माला धारे सो तन खहिया प्रायश्चितीय)

रहितनामा भाई दयासिंह जी'

'जो सिख गलमहि धागा मोले। चोपड़ बाजी गनना खेले। जन्म सुश्रान पावेगा कोटि।

रहितनामा भाई प्रहलाद सिंह जी

यह पाठ ही निषेधपरक मान कर सिख यज्ञोपवीत धारण का निषेध करते हैं। इन पर जो सिखों के लेख हैं अब वह लिखेंगे, ताकि ठीक २ समझ सकें, कि उनका भाव क्या है।

भाईवाला, मरदाना नामक दोनों गुरु नानक देवजी के साथ देश विदेश में रहे, गुरु नानक जी के स्वर्गवास के पश्चात् गुरु अंगददेव जी ने भाईवाला से पूछ कर गुरु नानक जी का जीवन चरित्र लिखा उसका नाम है 'जन्म साखी' भाई वाला वाली. उसमें यह पाठ है।

"जां गुरु नानक नौ वर्षां दा होया तां जनेऊ पावण दी रीत करन वास्ते कालू (गुरु जी के पिता का नाम था) ने पुरोहित हरदयाल को बुलाइया। शुभ महूरत देख कर पुरोहित जी ने सभ सामग्री मंगवाई। जो जाति भाई कालू के थे, सभ को कहा, अर ब्राह्मण जो वहां रहते थे, सभ को निउता (निमन्त्रण) दिया, सभ भाई बन्द जाति के अर ब्राह्मण भी इकत्र हो चूके गुरु बाबा जी नो जनेऊ पावने लगे। अस्थान को लेबन कर वेद विधि से चौक पूर्ण दिया। वेदी वंश के सब भाई औरब्राह्मण जो वेद विधि के

ज्ञाता थे सर्वज्ञ इकट्ठे होइके बैठे। बाबा नानक जी को अस्नान करवाके बुलाइया, तां बाबा जी अस्नान करके आ बैठे। एसे शोभा पावते हैं, जैसे सब तारामंडल में चन्द्रमा शोभा पावता है। पुरोहित ने क्षत्रियों का रीति वेदविहित सब करवाई जो पुरातन रीति थी वह और कुलाचार सब सिखाने लगा। सन्ध्या, तर्पण, सिखा सूत, धोती, जनेऊ माला, तिलक षट्कर्म गुरु जी नूं सिखावने लगा। तो सर्व समर्थ गुरु नानक जी मुक्त मुक्त दे देणे वाले पुरोहित नूं कहन लगे। हे मिश्र जी! इस जनेउ के पाने से क्या अधिकता हुन्दी है, इस जनेऊ पाए दा क्या धर्म है, अते कौण सी पदवी मिलदी है, इसदे न पहनने से क्या ऊणता (न्यूनता) हुन्दी है। तां हरदयाल जी बोले 'इस जनेऊ दे पहने बिना, अपवित्र हुन्दा है। चौके का अधिकार नहीं हुन्दा, अपवित्र रहिन्दा है। जब वेद विधि पूर्वक क्षत्रिय ब्राह्मण इस जनेऊ नूं पहरदे हन, तब सब कर्म, धर्म के अधिकारी हुन्दे हन। तां फेर गुरु जी कहिया। सुणो पंडितजी। क्षत्रिय ब्राह्मण होकर जनेऊ गल पाइया, पर बुरे कर्म करन थी न टलिया, खोटे कर्म करदा ही रहिया, तां ब्राह्मण क्षत्रिय जनेऊ पाइके बाहरले धर्म नू क्या करेगा धन दे वास्ते हिंसा, द्रोह अधर्म, अन्त पर्यन्त, दुष्टता, झूठ, चुगली कीती, तब वह क्षत्रिय, ब्राह्मण नहीं चंडाल है। अंत नूं यमराज दी सासना पावेगा, तिसनूं जनेऊ पाएदा क्या फल होया। ईहा जो पाप करेगा, नरक भोगेगा।

जब इह वार्ता गुरु जी ने कही. तां जितने लोक बैठे सन सब हैरान हो मन में कहने लगे, हे! परमेश्वर जी, अजेतां इह बालक रूप है, अते तां कैसीयां बातां करता है।

तां फेर पंडित कहिया, हे नानक जी! ओह कौनसा जनेऊ है, जिस जनेउ पाये ते इस प्राणी दा धर्म रहिन्दा है, तां बाबा जी ने इक श्लोक कहिया।

'दइया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत बट.....' 'पहले लिख चुके हां' तां फेर पंडित जी ने कहिया महिता कालू, तेरा पुत्र कोई देवता है, आपे ही जनेऊ पावे। तां महिते कालू कहिया, बच्चा महापुरुष भी जगत दी चाल करते आये हैं, तां बावे कहिया, जिवें तुहाड़ी रजाइ।

तां पंडित ने कहा, हे नानक जी ! एस जनेउ नूं पवित्र करो, तां बाबेजी ने जनेऊ पाइया ।"

जन्म साखी पृष्ठ २०-६३ ।

भाई मनीसिंह जी गुरु गोविन्द जी की सेना में रहे, उन्होंने भी एक पुस्तक 'जन्म साखी' नाम का लिखा है इसे जन्म साखी, भाई मनीसिंह जी, के नाम से कहते हैं, उसका निम्न पाठ है । "तां राय बुलार (तलवंडी का सरदार) ने आखिया, नानक तू वली हैं । अर सेवकां नूं कहिया, तुसी कालू नूं बुला लियावो । तां ओह कालू नूं बुलावण गये, तां कालू बिजनाथ पुरोहित दे घर बाबे दे जनेऊ दा महुरत पुच्छण गया होइया सी, तां ओह ओथों ही बुला लियाए, तां राय बुलार ने कालू नूं पुछिया, कि तूं बिजनाथ दे क्यों गया सी ? तां कालू कहिया, मैं पुत्र दे जनेऊ पावण वासते लगण गिणन गया सी, अते ओस आखिया है, कि सवा सौ मण लुचियां अर खीर ब्राह्मणां वासते तयार करो । अर दस बकरे अर पंज सौ मण और पदार्थ क्षत्रियां वास्ते तयार करो; अर इक मृग भी शिकार दा मारिया होया होवे । होर सामग्री तां तयार कर आया हां, पर इक मृग दी त्वचा हथ नहीं लग दी । तां राय बुलार कहिया, मैं भलके (कलको) शिकार चढ़ूंगा, अर मृग मार के लियाऊंगा । तां कालू कहिया, भलके नौचन्दा एतवार (रविवार) है अर तिथि पंचमी है, सो मैं भलके नानक दे जनेऊ पावांगा । तुसां मृग जरूर लियावणा ।

तां बाबे कहिया, कि पंज सौ मण जो, कचौरी, कड़ाह (हलवा) साधां संत वासते होर तयार करना, जो तलवण्डी दे चुफेरे साध उतरे होये हन,

तां कालू गुरु नानक जी नूं लेकर घर आइया, अर यज्ञ (भंडारे) दी तयारी करके बिजनाथ दे बाबे नूं लै गइया, अर सब ब्रह्मपुरी अर सब संत साध इकट्ठे होये, तां कालू आखिया । हे पुरोहित गुरु नानक जी नूं गायत्री मंत्र भी दे दो अते जनेऊ भी पाओ । तां पुरोहित लगा गुरु नानक जी दे कन विच गायत्री मंत्र फूकण ।

तां बाबे पंडितजी नूं कहिया कि तूं आप मंत्र सिखिया होइया हैं ? मैनूं (मुझे) सिखावता है तां उस आखिया, मैं पुराण, शास्त्र सब कुछ पढिया होइया हां तां बाबे, कहिया, चहुं वेदों का मत क्या है। तां ओस कहिया के तूं जाणदा हैं, ता तूं ही कह तां बाबे श्लोक कहिया।

दइया कपाह संतोख सूत जत गढी सत वंट। (देखो आरम्भ में) तां पुरोहित कहिया हे कालू तेरा एह पुत्र कोई देवता पैदा होइया है पर जिवें हनुमान नूं रावण ब्रह्म फास पाई सी, ते ओस आपे (स्वयम्) मन्न लई सी। सो इह भी जे आपे मन्न लयेगा, तां जनेऊ पावेगा। तां कालू आखिया, बच्चा, महां पुरुष भी जगत दी चाल करदे आए हन, तां बावे कहिया जिवें तुहाडी रजाइ, तां बाबे नूं जनेऊ पुआइके कालू घर लियाइया जन्म साखी भाई मनीसिंहजी। पृष्ठ १० १७

इन दोनों में अंतर यह है उसमें उपवीत घर हुआ और पुरोहित हरदयाल था, इसमें राय बुलार भृगवर्म लुच्चियां कचौरियां, मांस भी है और संस्कार पुरोहित के घर पर हुआ और उसका नाम बृजनाथ है, उपवीत डालना सम ही है।

इतिहास लेखक भाई संतोखसिंहजी ने नानक प्रकाश में इस प्रकार लिखा है—

"कालू बहुरो कीन विचारा, यज्ञोपवीत देन हितधारा।
पुरोहित जो तिह को हरदयाला, इसे बुलाइ लीनो तत्काला।
उर अभिलासा सकल सुनाई, क्षत्रिय रीति करो द्विज राई।
सुनकर वचन अस द्विज हरदयालू, कह्यो जो मौज सब आन बिसालू।
शुभ अवसर सो दीन बताई, कर आरम्भ जिम अधिक बधाई।
द्विजवर ते सुनकर सब कालू, सब सम्भारन आन उतालू।
गोमयते लेपन छित करके, पूरयो चौक हर्ष उर धरके।
श्री नानकजी पुन बुलवाये, द्विज वाहुज के बीच बसाये।
क्षत्रिय रीति जु हुती पुरातन, सो कीनो द्विजवर सब भातन।

कुल आचार सिखावत लागा, पुन पावन जंञू अनुरागा।
पूछत ते द्विज मोह सुनाओ, किस कारण ते जंञू पावो।
द्विज क्षत्रिय को धर्म जु धरणी, यज्ञोपवीत सु पावन करणी।
द्विज बाहुज को जिस बिन धर्मा, रहत नहीं बूझहु इह मर्मा।
वेदन विधि सों जबगर पावहि, द्विज बाहुज निज धर्महि आवहि।
सुन पुरोध के वचन कृपाला, बोलत वदन कह गिरा रसाला।
द्विज बाहुज के धर्म जो आही, गर में पाए सूत रहा ही।
किधों सुकर्म करेते रहई, दया आदि जो शुभ निर वहई।
पाय सूत गर करत कुकर्मा, धनहित हिंसा द्रोह अधर्मा।
अंत पर्यन्त दुष्टता धारे, झूंठ पिशुनता चित हितकारे।
स्यों क्षत्रिय द्विज किधों चंडाला, लहहि जाय यमदंड विसाला।
कौन जनेऊ तिहं फल दीना, पायो नरक ईहां अघ कीना।
कौन जंञूते जाय न नरका, जाको यम नहि करे कुतर्का।
सो निज रसना देहु सुनाई, सुनन चाह सब उर हरखाई।

श्लोक महला १

दइया कपाह संतोख सूत जत गंढी सतवट
एह जनेऊ जीअ का हई तां पांडे घत।
ना एह तुटे न मल लगे ना एह जले न जाइ।
धंन सु माणस नानका जि गल चले पाई।

सो बालक इह यज्ञोपवीता, वेद पंथ महि गिणिया पुनीता।
परम्परा पावन धर धर्मा, द्विज बाहुज को राखत भर्मा।
ब्रह्मादिक ते इह चल आवा, सनक सनन्दन सब पहनावा।

महला १

चउकड़ मुल अणाइया बहि चउके पाइया।
सिखा कंन चढाईया गुर ब्राहमण थीया।
ओ मुया ओह झड़ पइया वेतगा गइया।

पुन तिह काल जो काल ज्ञाती सो बोले निज बात सुहाती ।
द्विज बाहुज सब सब तुम वर आवा, पहरो जंञू जगत सुहावा ।
जो निज कुल की चलहि न चाले, जात भ्रष्ट ते करें निराले ।
सर संदूरन अर परवारू, हर्ष उर कर रहु, गुर धारू ।
ताते सबको बध्यो हुलासा, मिट जैहै मन होहि उदासा ।
एक बार गर पाइ जनेउ, पुन करिये उर इच्छा जेऊ ।
अस सुन कर ज्ञापन के बैना, पुन बोले श्री पंकज नैना ।

महला १

लख चोरियां लख जारीयां लख कूड़ीयां लख गालि ।
लख ठगीयां पहनामीयां रात दिवस जीआ नालि ।
तग कपाहहु कतीऐ बाहमण वटे आइ ।
कुहि बकरा रिन्ह खाइया सभ को आखे पाइ ।
होय पुराणा सुटीऐ भी फिर पाईऐ होर ।
नानक तग न तुटई जे तग होवै जोर ।

अस बिधि श्री नानक मतदानी, उपदेशन की उचरत बानी ।
बचन बदत विप्रन वर आई, यज्ञोपवीत दीयो पहराई ।
भूखन अंग जब सुख सदना, द्विज दंभन के कीन निकदना ।
तिह छिन हर्षयो उर परवारू, सब के मनते मिटा रंभारू ।

नानक प्रकाश अध्याय ६

जन्म साखी भाई बाले वाली जन्म साखी भाई मनीसिंहजी । भाई संतोषसिंहजी तीनों 'दइया कपाह' वाला शब्द पढ़कर भी उपवीत धारण करना लिखते हैं, इसलिये यह शब्द उपवीत के निषेध परक नहीं है ।

पंडित तारासिंह जी ने लिखा है:— "आदि ग्रंथ साहिब के वचन जो निन्दा परक प्रतीत होते हैं, तिनका तात्पर्य दइया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट आदि पाठ से कहे जनेऊ की स्तुति में है तथा ज्ञान रूप यज्ञोप-वीत की स्तुति में हैं, इसकी निन्दा में नहीं ।

गुरमत निर्णय सागर पृष्ठ ४२४ यह पुस्तक महाराजा पटियाला ने छपवाया था, और पंडित तारासिंहजी निर्मल संत थे, उन्होंने सिख मत के कई पुस्तक लिखे हैं।

प्रश्न—जब बालक थे, उस समय माता, पिता सम्बन्धियों के प्रभाव से यज्ञोपवीत पहन लिया था, और बड़े होकर उतार दिया होगा।

उत्तर—बड़े होने पर भी उपवीत उतारा नहीं था इसका पता निम्न लेखों से मिलता है। जिस समय गुरु नानक देवजी का विवाह हुआ, उस समय भी उपवीत था। यथा—

"महिन्दी पद संयल कोकनदं, मकरंद अमन्द उदार बनाई।
गर चीर है पीत प्रवीत मनोहर, यज्ञोपवीत महा छवि छाई।
कर कंकन कंचन भूर कयूर, बनी उर माल विशाल सुहाई।
जन शांति स्वरूप सिंगार धरे, जग मैं प्रगटयों निज भाव दिखाई।

नानक प्रकाश अध्याय २२ छंद ४४

विवाह के पश्चात् दो पुत्र रत्न उत्पन्न हुये श्रीचन्द, लक्ष्मीचन्द, तब वैरागी होकर एमनाबाद में जाकर तपकरने लगे उस समय का वर्णन इस प्रकार है—

"तां आगे क्या देखे, इक तपा जेहा ते गल विच जनेऊ हैसु, अते इक हुमेटा (अरदाना) नाल हैसु॥ जन्मसाखी पृष्ठ ५८ सूर्यवंशी खालसा पंथ पृष्ठ १११।

तब लालो ने गुरु नानकदेवजी को भोजन का निमंत्रण दिया, और भोजन तैयार करके गुरुजी के पास आया और कहा—

'इतने महि लालो चल तिह आवा, इह विधि कहयो सुनाई।
अचवहु असन चलहु श्री नानक दुःख कुंजर मृगराई।
सब भव पन्नग जे ग्रसे, वैनतेय हो तिनको।
कृतार्थ कर मुझ करुणा कर, आनन पाह असन को॥२३॥
सुनकर श्रीमुख वचन भाखे, आनहु इह ठां जाई।

कह लालो तुमरे गल जंमू वहर असन क्यों पाई।
चौके अन्दर चलकर जेवों, उत्तम जन्म तुम्हारा।
जो इह ठां मंगवावहु स्वामी संसे (संशय) खाय हमारा ॥२४॥
श्रीमुख कहत धरत है जितनी, तितनो चौका जानउ।
सच रते ते सुचे होये, मन को भ्रम मिटानो।
सुनकर लालो विगसयो तबही, आनयो भोजन धाई।

नानकप्रकाश अध्याय ३८

तां लालो सोई तैयार करके सदण आया. तां लालो आखिया, गुरुजी प्रसाद तैयार है, तां गुरु नानक आखिया, भाई लालो, एथे ही लिआओ, तां लालो आखिया, जी तुहाडे गल विच जनेऊ हैगा; तां गुरु नानकजी आखिया, जितनी धरती जितना ही चौका. एथे ही ले आउ, तांते लालो प्रसाद लिया के आगे आण रखिया। जन्म साखी पृष्ठ ७८।

इन लेखों से सिद्ध है, गुरु नानक देवजी ने यज्ञोपवीत सारी आयु धारण दिया।

प्रश्न—यदि यह बात है, तो गुरुजी ने दइया कपाह वाला शब्द किसलिये कहा ?

उत्तर—यदि कोई केवल यज्ञोपवीत धारण करके अपने आपको धर्मात्मा मान ले, उसके लिये यह शब्द है, गुरुजी का भाव यह है यज्ञोपवीत धारण करके उत्तम गुण भी धारण करो, इसकी पुष्टि में गुरुजी के निम्न शब्द प्रमाण हैं—

"पत विण पूजा सत विण संजम जत विण काहे जनेऊ।
नावहु धोवहु तिलक चढ़ावहु सुच विण सोच न होई।

रामकली अष्टपदीयां म० १ अ० १, ६

नानक सचे नाम बिन क्या टिका क्या तग।

आसा दी वार महला १ शब्द ८

खत्रड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूत धोती कीनी।
तूं साहिब हउं सांगी तेरा प्रणवै नानक जाति कैसी।

आसा महला १ शब्द ३३

प्रश्न—इस शब्द के अर्थों में अलंकार न मानकर सीधे अर्थ ही क्यों न माने जायं।

उत्तर—आदि ग्रन्थ में व्यवहार सम्बन्धी अनेक बातों को अलंकार में कहा है, जैसे उनको अलंकार मानकर ही निर्वाह होता है, वैसे यज्ञोपवीत सम्बन्धी शब्द भी अलंकार मानकर ठीक होता है मैं वह शब्द लिखता हूं ताकि समझने में सरलता हो।

"सुण बेटा असाड़ी खेती बाहर पक्की खड़ी है अर जो तूं विच जाकर खड़ा होवें, तां खेती क्यों उजड़े, अते सब कोई शरीक अते देखण वाले आखण, वाह, वाह भाई कालू दा पुत्र भला होया है, ते सुण बेटा लोकां दी बात है।

'खेती खसमां सेती' तां फेर गुरुजी बोले हे पिताजी हुण असां नवेकली खेती वाही है, अते हल वाहिया है, अते साड़ी जमीन वत्र आई है सो ओह खेती असी बहुत तकड़ी हो..... फेर गुरुजी ने शब्द आखिया—
राग सोरठ महला १

मन हाली किरसानी करणी सरम पाणी तन खेत।
नाम बीज संतोख सुहागा, रख गरीबी वेस।
भाउ करम कर जमसी से घर भागठ देख ॥१॥

बाबा माइया साथ न होई, इन माइया जग मोहिया विरला बूझे कोइ॥

तां कालू ने आखिया जद्दा खेती नहीं करदा, तां तूं हट्टी ही कढ़ बैठ, असां खत्रीयां दी खेती तां हट्टी है, तां गुरु नानकजी ने दूसरी पौड़ी आखी।

हाट हट्ट कर आरजा सच नाम कर वथ सुरति सोच कर भांडसाल तिस विच तिसनो रख । वणजारियां सिउ वणज कर लै लाहा मन हस ।

तां फेर कालू ने आखिया हे नानक जे हट्ट नहीं करदा, अते तेरा मन फिरनेते हैं तां सौदागरी घोड़ियां दी कर, तां बाबे आखिया, पिताजी, असी सौदागरी भी कीती है, तां बाबेजी तीसरीं पौड़ी आखी ।

सुण सासत सौदागरी सत घोड़े ले चल ।
खरच बन्हु चंगियाइयां मतमन जाणहि कल ।
निरंकार दे देस जाहि तां सुख लहहि महल ।

तां कालूजी ने एह सुण के आखिया, हे नानक जे तूं साडे कमकार तों रह चुकों, पर घर तां चलते बैठ, असां तेरा खटणा छडिया है········ किसे दी चाकरी हीं कर, तां गुरु नानकजी चोथी पौड़ी आखी—

लाइ चित्त कर चाकरी मन नाम कर कम्मु ।
बन बांदियां कर धावणी ताकों आखे धन्न ।
नानक वेखैं नदर कर चड़ै चवगण वन्न ।
जन्म साखी पृष्ठ २६-२८ राग सोरठ थ १ म २

अब पढ़ने के लिये बिठायें तब निम्न शब्द कहा—

जाल मोहु घस मस कर मति कागद कर सार ।
भाउ कलम कर चित लिखारी गुर पुछ लिख वीचार ।
लिख नामु सालाहि लिख, लिख अंत न पारावार ॥१॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणा ।
जिथे लेखा मंगीऐ तिथे होइ सचा नीसाणा ।

श्रीराग महला १ शब्द ६ । जन्म साखी पृ० २७

जत सत चावल दया कणक कर प्रापति पाती धान ।
दुधकर्म संतोख घीउ कर ऐसा मांगऊ दान ।

खिमा धीरज कर गऊ लवेरी सहजे वछुरा खीर पीऐ।
सिफत सरम का कपड़ा मांगउ हरिगुण नानक रवत रहैं।

राग प्रभाती महला १ शब्द ७

इन शब्दों में कृषि, दुकान, सौदागरी, नौकरी, मसि, कागज, लेखनी, लेखक, चावल, गोधूम, धान, दुग्ध, घृत, गौ, वत्स, वस्त्र, सब अलंकार में ही कहे हैं। अब इन शब्दों की व्यवस्था करते समय अलंकार माना जाता है, तब यज्ञोपवीत परक शब्द भी अलंकार मान कर व्यवस्था सम रूप से करनी ठीक है अत: गुरु नानकदेवजी ने यज्ञोपवीत का निषेध नहीं किया, मण्डन किया है जैसा कि गुरु मत निर्णय सागर में पंडित तारासिंहजी ने लिखा है।

प्रश्न—गुरु नानकजी से अतिरिक्त और गुरुओं के उपवीत था या नहीं।?

उत्तर—गुरु अंगद जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुनदेव जी के विषय में इतिहास ग्रन्थों में कुछ लिखा नहीं है। इसी भांति गुरु हरराम जी और हरकृष्ण जी का भी नहीं लिखा है किन्तु हर गोविन्दजी, गुरु तेगबहादुर जी और गुरु गोविन्दसिंह जी के उपवीत का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न—गुरु हरगोविन्द जी के उपवीत का लेख किस पुस्तक में है? बताओ।

उत्तर—गुरु हरगोविन्द जी के यज्ञोपवीत का लेख दो स्थानों पर है। प्रथम तो गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द है, इसे जी. बी. सिंह ने अपनी पुस्तक में लिखा है, मैं प्रथम उसका पाठ लिखता हूँ।

रामकली छन्त महला ५ विच पंजवें महले दे इक छन्द दीयां दो पहलीयां ही तुकां (पंक्तियां) दित्तीयां हुंदीयां हन। बूड़े संधु वाली बीड़ विचवी पहलीयां ही तुकां हन। पर एस १७८६ वाली बीड़ विच अते इक होर ग्रन्थ विच जो सम्वत १७९८ दा लिखिया है उह सारा छन्द २४ तुकां दा दित्ता है असी हेठां (नीचे) नकल करदे हां।

रन झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एक ध्यावहु ।
सतिगुर तुम सेव सखी मन चिंदपड़ा फल पावहु ॥
सतिगुर ध्याइया कर्म पाइया, अनूप बालक जंमिया ।
सतिगुर साचे भेज दिया चिर जीवन बहु पुंनिया ॥
महा आनन्द होया सदा मंगल हरि गुण गावहु
जन कहे नानकु सफल जाम्रा, सतिगुर पुरुख ध्यावहु ॥
अमृत भोजन इकत्र करे परवार बुलाइया ।
वंडि अहु अमृत नाम हरे, जित सब त्रिपताइया ॥
सतिगुर बहके वंड कीति, सगल भाउ दिवाइया ।
कर्मा इदग वंड होई, खाली कोई न जाइया ।
सब सिख संगत भई इकत्र, महा आनन्द समाइया ॥
विनवंत नानक साम हरि की, सर्व सुख मैं पाइया ॥ २

रीति सकल कराइया हरि सिउ लिव लाई ।
भदण, उरोत कराइया गुर ज्ञान जपाई ॥
गुर ज्ञान जपिया सुखहि दाता ।
चटसाल बालक पाइया ।
सगल विद्या सम्पूर्ण पढ़िया ।
गोविन्द बिदैं सनाइया ॥

जेवणवार; नामकरण, विरथा कोई न आई ।
विनवन्त नानकदास हरिका मेरा प्रभु अंत सखाई ॥ ३
साध सन्त इकत्र करे, बालक करहु मंगेवा ।
थापे सजन जन कुड़म भले वंडि अहु अमृत मेवा ॥
अमृत पाइया गुर ज्ञान द्रिड़ाइया ।
सगल दुख मिटाईया ॥
लगण लिखाइया पुरहु आइया ।
चीआहु, कुड़म दिवाइया ॥

अचरज जन्म बणाई ठाकुर ।
मुनिजन ढके सम देव सुर ।
जन कहे नानक काज होआ बजे अनहद तूरा ॥ ४

इह साफ दिस रहा है कि हरगोविन्द साहब दे जन्म तों लैके विआह तक दा सारा हाल है । हरगोविन्द साहिब दे जन्म दी गुरु अर्जुनदेव नूं बड़ी खुशी होई । जिस तरां कि कितने ही शब्दां तो दिस रहा है । जन्म, वधाई, जिआफत, मुंडन, जनेऊ, पांधे बिठाना, मंगनी, लगन, जंज अते बिआह सगल रीति कराई, बाजे बजाए, अते गुरु साहिब सब गलां करके खुश होये हां, इह लफ्ज़ 'सतिगुर बहि के वंडिया' कुज अणोखे हन अते उन्हांदे निर्मान स्वभाव दे उलट हन"

प्राचीन बीड़ा पृष्ठ १९८—२०० इस शब्द में 'उणेत' शब्द से यज्ञोपवीत का उल्लेख है और यह शब्द गुरु अर्जुनदेव जी का ही कहा हुआ है उन्होंने अपने पुत्र का यज्ञोपवीत स्वयं करवाया था और दूसरा ग्रन्थ गुर विलास है, उसका निम्नपाठ है ।

"गुरु निदेस सुत विप तब, शुभ जंजू गर धार ।
कर पूजा गुर पूत गर, लागो पुरोहित डार ॥
हरगोविन्द कहयो हम गो जंत्र हरि असि पाई ।
कुल पुरोहित कुल रीति कर पायोगर हरखाय ॥

गुरु विलास पादशाही ६ अध्याय ५

इसमें पुरोहित के द्वारा गुरु हरगोविन्द जी के यज्ञोपवीत का वर्णन है, यह दोनों शब्द गुरु गोविन्द जी केउपवीत का विधान करते हैं ।

प्रश्न—गुरु तेगबहादुर जी का उपवीत कहां लिखा है ?

उत्तर—गुरु तेगबहादुर जी का उपवीत तो गुरु गोविन्दसिंह जी ने ही लिखा है वह पाठ यह है ।

'तिलक राखा जंञ प्रभु ताका ।
कीनो बड़ो कलू महि साका ॥

विचित्र नाटक अध्याय ५ छन्द १३

इस शब्द से गुरु तेगबहादुर जी के तिलक जंञू का उल्लेख है।

दिल्ली लाल किलामें गुरु तेगबहादुरजी को जो चित्र प्रदर्शिनी में है, उसमें उनके भाल पर तिलक है, इससे बिना संकोच यह कह सकते हैं गुरु गोबिन्द सिंह जी के लेखानुसार उनके तिलक जंञू दोनों थे।

प्रश्न—गुरु गोबिन्द सिंह जी ने गुरु तेग बहादुर जी का तो लिखा है उनका भी किसी ने लिखा या नहीं?

उत्तर—सिख इतिहास लेखक ज्ञानी ज्ञानसिंह जी हैं, उन्होंने पंथ प्रकाश नाम का पुस्तक लिखा है, जिसमें दस गुरु और सिखों का इतिहास लिखा है, उन्होंने जहां गुरु गोबिन्द सिंह जी के विवाह का वर्णन किया है, वहां यह पाठ है।

पीत पुनीत सुपरना धोती, जोति नवि थव छवि छाजै।
पीत जनेऊ मनो बदन ससि पै, बिजरी भ्राजै॥
पंथ प्रकाश पृष्ठ ४१०

इस प्रकार विवाह संस्कार के समय गुरु गोबिन्दजी के भी यज्ञोपवीत था यह ज्ञानी जी लिखते हैं। अतः इन गुरुओं के उपवीत-में कोई सदेह नहीं यदि 'दइया कपाह' वाला शब्द यज्ञोपवीत के निषेध परक होता तो गुरु हरगोबिन्द जी, गुरु तेग बहादुर जी, गुरु गोबिन्द जी के यज्ञोपवीत का उल्लेख न होता।

प्रश्न—तब उस शब्द का भाव क्या है?

उत्तर—उसका भाव वही जो

'यस्तन्नवेद मृचाकरिष्यति' और न लिङ्ग

अर्थात् जो ईश्वर को नहीं जानता वेद उसे क्या करेगा, इसमें वेद पढ़ने का निषेध नहीं, अपितु वेद पढ़ कर ईश्वर जानने का विधान है उसी प्रकार, मनु जी बाह्य लिंग को धर्म का कारण न लिख कर यह आदेश देते हैं, बाह्य चिह्नों के साथ अन्तर गुणों को भी धारण करना चाहिये केवल वेष या बाह्य लिंगों के धारण मात्र से लाभ नहीं, तद्वत गुरु नानक देव जी ने इस

शब्द द्वारा यह उपदेश दिया है, यज्ञोपवीत धारण करने वाले को, दया, संतोष, यत, सत का भी पालन करना आवश्यक है। इससे यज्ञोपवीत का विधान दृढ़ होता है न कि मुख बंधन का निषेध।

प्रश्न—यह व्यवस्था तो शब्द की हुई, किंतु रहित नामों में जो भाई चोपा सिंह जी, भाई दया सिंह जी और प्रहलाद सिंह जी ने लिखा है।

"गुरु जी का सिख जंञू टिके दी काण न करे अर्थात् जंञू टिका धारण न करे। जनेऊ न पाइ, तिलक धागा, काठ दी माला धारे, सो तनखाहिया (प्रायश्चित्तीय)।

जो सिख गल नहिं धागा मेले।
चौपड़ बाजी गलका खेले।'
जन्म सुजान पावेगा कोटि।"

इनकी व्यवस्था कैसे होगी, क्योंकि यह भी तो गुरु के सिख थे, और सिखों की सब रहित इन रहितनामों ही में लिखी हुई है।

उत्तर—इसका उत्तर मैं अपनी ओर से न देकर पंडित तारासिंह जी ने जो इस पर विचार करके लिखा है वही सुना देता हूं, उससे आपका संदेह निवृत्त हो जायगा।

प्रश्न—अच्छा सुनावो, पंडित तारासिंह जी क्या लिखते हैं।

उत्तर—"प्रश्न चौबीसवां।"

गुरमत में तिलक, माला, जनेऊ रूप बाह्य संस्कार धारण करने योग्य हैं वा नहीं?

उत्तर—जैसे अंतर वैराग्य, विवेकादि संस्कार धारण योग्य है, तैसे बाह्य संस्कार मालादिक भी योग्य हैं, गुरु सब ही धारते रहे हैं, और बाह्य

संस्कारों की रक्षा हेत ही गुरु जी ने सीस दिया है कहिया है विचित्र नाटक में—

धर्म हेत साका जिन किया। सीस दिया पर सिरर दिया॥
तिलक जंञू राखा प्रभु ताजा। कीनो पड़ों कलू महिं साका॥

एता विशेष है, जिस जाति में जो संस्कार योग्य है, वह धारे। जिसके योग्य नहीं, वह मत धारे। जैसे जनेऊ का धारना तीन वर्णों में है, वह धारे। शूद्रों में और वर्णसंकरों में नहीं, वह न धारें, याही ते प्रथम गुरु जी ने वैरागियों वत् भाई वाले और बावे बुढ़े आदिकों को पहराइया नहीं। जो ब्राह्मण क्षत्रिय सिख पहरते थे, तिनका हटाइया नहीं, तथा गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अमृत समय दयासिंह का हटाइया नही और चारों को पहराइया नही। कहीं अमृत समय पहरावना लिखा होवे तो रहो इनको पहरावना। परन्तु दयासिंह का नहीं हटाइया। याते जिनका अधिकार है वह निशंक पहरे, हटावने में गुरु की आज्ञा नहीं। एसे तिलक भी ग्रंथ साहिब की समाप्तिकाल में अर कथा काल में करन वत् सर्वदा गुरु को चन्दन चढ़ाके निःशंक करे। गुरुयों ने हटाइया नहीं। पुनः माला भी लोहे कर्पूरादिकों के सिमरने फेरने वत् जिस चीज की रुचि होवें, उसको फेरे गुरु ने हटाई नहीं।"

गुरुमत निर्णय सागर पृष्ठ ४१।४२

इसमें पंडित तारासिंह जी ने यज्ञोपवीत, तिलक, माला तीनों का मंडन किया है रहित नामों के विषय में इनकी सम्मति निम्न प्रकार है।

"जेकर रहित नामे प्रेम संमार्ग जैसे गुरु जी ने बनाये होते, तब भाई मनीसिंह जी जरूर साखी में इसका पता लिखते। लिखिया कोई नहीं। इसते वह गुरु की रचना नहीं, प्रेमी सिखों की है। छखिये की बात मानने

लायक तो कोई भी नहीं होती परन्तु सच्ची बात बालक की भी मान लेनी। इस वासते जो असल होवे, सो सची मानो। कोई प्रेमी लोग कहते हैं। गुरु के नाम से लिखी को जेव देनी उचित है। मेरे को यह उचित नहीं मालूम देती, क्यों कि झूठ को जेव देनी वाजब होती, तब गुरु तेग बहादुर जी बकाले (ग्राम का नाम, जहां गुरु तेग बहादुरजी गुरु होने से पूर्व रहते थे) में बाईस मंजियों (उस समय वहां २२ गुरुबन कर गद्दी लगा कर बैठते थे, वह २२ मंजियां थीं) को जेव देते। आप जाहर न होते। गुरु हरराय मिटी बेईमान की पढ़ने वाले रामरायजी के छल के पाठ को जेव देते * बुरा समझ के गद्दी से खारज न करते। नौमें गुरु जाहर हुये सातवें गुरुजी ने खारज किया। इससे निश्चय कराया, झूठ को जेव भुलकर भी भला लोक न देवो इसी से मनीसिंहजी ने बाणी के अर्थों का निर्णय लिखा। जो पीछे और लोग रचेंगे, तब निर्णय करना कठिन होगा, यांते उन्होंने जेव देनी हटाई, जो देनी कहे, वह जाल के प्यारे हैं।............

वास्तव में यह निश्चय है, जो मनीसिंहजी को बीड़ समय नहीं मिली सो गुरुओं ने नहीं रची।"

* सिख इतिहास की घटना है, औरङ्गजेब ने गुरु हररायजी को बुलाइया वह स्वयं न गये और अपने बड़े पुत्र रामरायजी को भेजा, रामरायजी ने ग्रन्थ साहिब के पाठ 'मिटी मुसलमान की' को बदल कर 'मिटी बेईमान की पढ़ा', जिस समय गुरु हररायजी को पता लगा, उन्होंने रामराय को कहला भेजा, मेरे सामने मत आना और उसको गुरुपाई की गद्दी न देकर अपने छोटे पुत्र हरकृष्णजी को गुरु गद्दी दी।

गुरु मतनिर्णय सागर पृष्ठ ५६६.२७

इस प्रकार पंडित तारासिंहजी इन रहित नामों को गुरु मत के विरोधी मानकर त्याज्य बतलाते हैं। और छत्रिये आदि शब्द रहित नामों के लेखकों के विषय में प्रयोग करते हैं, इसलिये रहित नामों में जो यज्ञोपवीत, तिलक; माला आदि का निषेध किया है, वह प्रमाण नहीं।

प्रश्न—आपने गुरु नानकदेवजी, गुरु हरगोविन्दजी, गुरु तेगबहादुरजी गुरु गोविन्दसिंघजी के यज्ञोपवीत धारण का लेख कहा, शेष छः गुरुओं के विषय में क्या सम्मति है।

उत्तर—गुरु अंगदजी, गुरु अमरदासजी बड़ी आयु में गुरुओं के पास आये थे इसलिये इनकी बाल्यावस्था को किसी ने विशेष रूप से लिखा ही नहीं, गुरुजी के पास आने के पश्चात् का ही विशेष लेख है और वह उचित भी है। गुरु रामदासजी का विवाह बीबी भानी से हुआ था वह गुरु अमरदासजी की कन्या थी। पश्चात् रामदासजी गुरुजी के पास रहकर सेवा करने लगे। एक अवसर पर बीबी भानी ने अपने पिता गुरु अमरदासजी से कहा, कि अब गुरुपाई अपने घर में ही रहे, इस प्रार्थना और रामदासजी की सेवा से प्रसन्न होकर उनको गुरु गद्दी की दीक्षा दी, उनका बाल्यकाल भी अपने माता पिता के घर व्यतीत हुआ अतः इन तीनों के उपवीत का लेख न लिखने पर कोई आश्चर्य नहीं गुरु अर्जुनदेवजी, गुरु रामदासजी के लघु पुत्र थे और गुरु हररायजी गुरु हरगोविन्दजी के पौत्र थे, तथा गुरु हरकृष्णजी उनके लघु पुत्र थे इनका यज्ञोपवीत भी किसी ने लिखा नहीं, तौभी अनुमान यही है, इन सब गुरुओं के उपवीत था, क्योंकि गुरु अंगदजी तेहण, गुरु अमरदासजी, भल्ला और अर्जुनदेवजी आदि सोढ़ी क्षत्रिय थे, और क्षत्रियों के

यज्ञोपवीत होता है। इसलिये इनके भी हुये होंगे, यह मानना ठीक है, गुरु हरगोविन्दजी का तो गुरु अर्जुनदेवजी ने लिखा है अतः यह अनुमान करना ठीक ही है कि उनके भी यज्ञोपवीत होगा।

प्रश्न—सब गुरु क्षत्रिय थे, इस कारण उनके यज्ञोपवीत था, यह मान भी लें, तब भी यह प्रश्न तो बना ही रहा, सिखों के यज्ञोपवीत होना चाहिये वा नहीं, क्योंकि सिख क्षत्रिय ही नहीं हैं, और वर्णों के भी हैं।

उत्तर—यह ठीक है, कि जन्म से सब सिख क्षत्रिय नहीं हैं, किन्तु गुरुजी के कथनानुसार सिख क्षत्रिय ही हैं। जैसा कि ज्ञानी ज्ञानसिंहजी ने लिखा है।

"अब तुम सोढ़ वंस द्विज क्षत्रिय, अच्युत गोत्र भये सब अत्रि।
गुरु घर जन्म तुम्हारे होये, पिछले जाति वर्ण सब खोये॥

ग्रन्थ प्रकाश निवास २६

इस लेख से यही सिद्ध होता है, जैसे गुरु गोविन्दसिंहजी सोढ़ी क्षत्रिय थे। उनकी दीक्षा लेकर सब सिख सोढ़ी क्षत्रिय हो जाते हैं, इसमें यह हेतु भी है अमृत छकते (दीक्षा) समय प्रत्येक दीक्षा लेने वाले को कहा जाता है, आगे को आपके पिता गुरु गोविन्दसिंहजी और माता साहिब देवा है। जब पिता गुरु गोविन्दसिंहजी है, तो क्षत्रिय होने में क्या संदेह। और गुरु नानकदेवजी का भी वाक्य है "गुरु के शब्दे जन्म बटाया"।

प्रश्न—यह तो पता लग गया कि सब सिख क्षत्रिय हैं, तो भी गुरुजी का कोई आदेश भी है वा नहीं, कि सिख यज्ञोपवीत पहनें, यदि याज्ञा नहीं तब तो ऐच्छिक बात है, कोई पहने वा न पहने, यदि विधान है तो पहनना आवश्यक हो जाता है।

उत्तर—गुरु गोविन्दसिंहजी ने यज्ञोपवीत धारण करने की आज्ञा सिखों को दी है, अतः उन्होंने सिखों के लिये विधान ही कर दिया है।

प्रश्न—वह आज्ञा क्या है।

उत्तर—बासियां वाले सिखों ने गुरु गोविन्दसिंहजी के पास दस प्रश्न लिखकर भेजे थे, और गुरुजी ने भाई मनीसिंहजी द्वारा उन प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर दिये थे, इन प्रश्न, उत्तरों को 'बाजबुल अरज' नाम से कहा जाता है, उन प्रश्नों में एक प्रश्न यज्ञोपवीत विषयक भी था, जिसका पाठ इस प्रकार है।

प्रश्न—अनेऊ पावने समय आगे सिर मुंडावने की रीति थी। अब सिख रोकते हैं। क्या हुकम।

उत्तर—सहजधारी के बेटे की कैंची से रीति करो, केसधारी के बेटे को दही (दधि) से केसी असनान (स्नान) करायो, अनेऊ समय।"

गुरमत निर्णय सागर पृष्ठ १६९

इस लेख में गुरु गोविन्दसिंहजी ने सब सिखों को आज्ञा दी है, कि सब यज्ञोपवीत पहने, भेद इतना ही है जिसने सिख मत की दीक्षा ली है अर्थात् अमृत छकिया है, वह दधि से केश धोकर यज्ञोपवीत पहनने की क्रिया करे, और जिसने दीक्षा नहीं ली है, अर्थात् सहजधारी है, वह सिर के बाल कैंची से मुंडाकर यज्ञोपवीत धारण करे, पुरानी प्रथा के अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार समय क्षौर कृत्य होता है, जो सिर के बाल छुरे से मुंडाने होते हैं उसमें गुरु गोविन्दसिंहजी ने विकल्प कर दिया है, और यज्ञोपवीत का विधान पूर्ववत् ही स्वीकार किया है, इस प्रकार दशमेशजी की आज्ञा सब सिखों को यज्ञोपवीत धारण की है।

प्रश्न—हमने यज्ञोपवीत के विषय में कई बार कई सिख ग्रन्थियों और सिख पंथ के अगुओं से पूछा है वह तो केवल निषेध ही बतलाते हैं, आज आपने सिखों के धर्म ग्रन्थों और सिख पंथ के ज्ञानियों के लेख उपवीत धारण के पक्ष में बताये, क्या सिख ग्रन्थी इनको पढ़ते नहीं हैं ?

उत्तर—कुछ ऐसे भी होंगे, जिन्होंने पद ग्रन्थ पढ़े न हों, कुछ ऐसे भी होंगे जिन्होंने पढ़े होंगे, और जानते भी होंगे, किन्तु किसी कारणवश इसे प्रगट करना नहीं चाहते। इसलिये किसी पर दोष देना ठीक नहीं।

प्रश्न—क्या आपका सिद्धान्त यही है कि सब सिखों को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये ?

उत्तर—हां, मेरा सिद्धान्त यही है, और मेरा पूर्ण विश्वास गुरुओं ने यज्ञोपवीत धारण किया था। और गुरु गोविन्दजी ने सिखों को जनेऊ पहनने की आज्ञा दी है और मैंने देखा भी है, पहले कई सिख उपवीत पहनते भी थे। हां आजकल नहीं पहनते हैं, इसके लिये यही कहना होगा।

'गुरु विचारा क्या करे जो सिखां मन चूक।'

भारत के प्राचीन मुद्रांक

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती। मू० ५०१ रु०

पुरातत्त्वीय शोध के आधार पर लिखे गये इस मौलिक ग्रन्थ में भारत के प्राचीन प्रसिद्ध नगर कौशाम्बी, अहिच्छत्रा, स्रुघ्न, सुनेत, प्रकृनानाकनगर, रोहीतक आदि से उपलब्ध प्राचीन सैकड़ों मुद्रांक (मोहरों) का सचित्र विवरण प्रकाशित किया है। हिन्दी भाषा में इस विषय का प्रथम और स्तुत्य प्रयास किया गया है। श्री स्वामी जी ने पन्द्रह वर्ष और लाखों रुपये लगाकर यौधेय, वृष्णि, पाञ्चाल आदि गणराज्यों के सेनापति, महासेनापति आदि राज्याधिकारियों के मुद्रांक एकत्र किये हैं। प्राचीन भारत के लुप्त इतिहास के पुनर्लेखन में यह सामग्री अपना बेजोड़ स्थान रखती है। पुस्तक संग्रहणीय और पठनीय है।

भारत के प्राचीन टकसाल

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती। मूल्य २०० रुपये

पुरातत्त्व की विशुद्ध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किये गये इस ऐतिहासिक शोध ग्रन्थ में प्राचीन भारत की मुद्रा निर्माण पद्धति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में कार्षापण यौधेय, भारतीय यवन राजा, कुषाण, सामन्तदेव, आदिवाराह मिहिरभोज, गदिया और भारतसासानी आदि विविध प्रकार की स्वर्ण, रजत और ताम्र मुद्राओं के सांचों का सचित्र और विशद वर्णन किया गया है। यह १८ वर्षों के परिश्रम का अद्भुत और मौलिक प्रयास है। ग्रन्थ वस्तुतः पठनीय और संग्रहणीय है।

निर्देशक :

हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय

(गुरुकुल झज्जर, रोहतक हरियाणा) दूरभाष ४८

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5099
दयानन्द मठ क्षेत्र

हमारे प्रमुख प्रकाशन

व्याकरणमहा भाष्यम्		चारुचरितामृतम्	१·००
प्रदीप-उद्योत-विमर्श सहित	३५०·००	भारतेतिहासः	५·००
काशिका	४०·००	तत्वबोध	१·००
अष्टाध्यायी (मूल)	१·७५	लिंगानुशासनवृत्तिः	१·२५
सामवेद (मूल)	१५·००	स्थावरजीवमीमांसा	२·००
उपनिषत्समुच्यः	५०·००	महर्षि दयानन्द जीवन	
योगरीति	३·००	कथा (भजन)	·७५
सन्ध्या अष्टांगयोग	५·००	असली अमृतगीता १-२ भाग	·७५
धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	२८.००	बस्तीराम रहस्य	·५०
निरुक्त हिन्दीभाष्य भाग दो	६०·००	मानस दीपिका	१·५०
योगार्यभाष्य	६·००	पोप की नाखर	·३०
सांख्यार्य भाष्य	२०·००	पाखण्ड खंडनी	२·००
वैशेषिकार्य भाष्य	५०·००	बस्तीराम अग्निबाण	१·००
न्यायार्य भाष्य	६०·००	गोरक्षा तथा सिखगुरु	·८०
वेदान्तार्य भाष्य	८०.००	सिख और यज्ञोपवीत	·७५
मीमांसार्य भाष्य १-३ भाग	१३०·००	मांस मदिरा निषेध	·७१
कुलियात आर्य मुसाफिर (१-२ भाग)	६०·००	दो महात्मा (ईसा दयानन्द)	१·००
आदर्श ब्रह्मचारी	०·८०	सामयिक समाधान	·५०
गीता विवेक	८·००	मनोविज्ञान शिवसंकल्प	६·००
स्वस्थवृत्तम्	१·००	वेद प्रवेश (१-२ खण्ड)	१·५०
महापुरुषों के संग में	२·५०	फिट्सूत्रप्रदीप	१·००
ओ३म् गीताञ्जलि	२·५०	महर्षि दयानन्द जीवन	२·२५
छन्दःशास्त्रम्	४·००	वेद विमर्श (प्रथम भाग)	२·००
काव्यालंकारसूत्राणि	२·००	सुखी जीवन	४·००
कारिकाप्रकाश	२·००	घर का वैद्य (तीनों भाग)	१०·००
दयानन्दलहरी	१·२५	रामप्रसाद विस्मिल	१·५०
विरजानन्दचरितम्	१·५०	ईशोपनिषद् व्याख्या	·७५
नारायणस्वामिचरितम्	·७६	संस्कृत प्रबोध	२·००
ब्रह्मचर्यशतकम्	·६५	दैनन्दिनी	२·५०
गुरुकुलशतकम्	·५०	जीव का परिमाण	·७५
		कन्या और ब्रह्मचर्य	·८०

प्रकाशक

हरयाणा साहित्य संस्थान, पो० गुरुकुलझज्जर, रोहतक

आर्य्य समाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस
पु परिग्रहण क्रमांक 5099
दयानन्द महिला महावि